जनजाति समाज और स्वतंत्रता संग्राम

भारत का जनजाति समाज अपनी आध्यात्मिक परम्पराओं विशिष्ट संस्कृति और श्रेष्ठ जीवन मूल्यों के साथ सदैव से भारतीय सभ्यता और संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है। जब जब देश की सुरक्षा पर संकट आया जनजाति समाज ने अपने शौर्य और बलिदान से राष्ट्र की रक्षा में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

जब अंग्रेज़ी शासन ने भारत में अपने साम्राज्य का विस्तार करना प्रारम्भ किया तो उन्हें सबसे प्रारम्भिक और सशक्त चुनौती वनवासी अंचलों से ही मिलना प्रारम्भ हुई। जनजाति समाज ने कभी भी अंग्रेजों की दासता को स्वीकार नहीं किया और समय समय पर सशस्त्र विद्रोह और संघर्ष किया।

चाहे तिलका माँझी के नेतृत्व में पहाड़िया आंदोलन हो, कोया जनजाति का विद्रोह हो, कोल जनजाति द्वारा सशस्त्र संघर्ष हो भगवान बिरसा मुंडा के नेतृत्व में संघर्ष हो, सिद्धू-कान्हू के नेतृत्व में संथाल आंदोलन हो, भीलों के विभिन्न आंदोलन हों, मानगढ़ का बलिदान हो, रानी गाइदिन्ल्यू के नेतृत्व में नागा आंदोलन हो अंग्रेजों के विरुद्ध जनजाति समाज के संघर्ष और बलिदान की एक समृद्ध परम्परा रही है।

संगठित आंदोलनों और विद्रोहों के अतिरिक्त जनजाति समाज द्वारा वैयक्तिक बलिदानों की भी एक लम्बी श्रृंखला रही है। हज़ारों नाम तो ऐसे हैं जिनका बलिदान इतिहास के पन्नों में दर्ज ही नहीं हो पाया। आज भी जनजाति समाज में ऐसे अनेक लोकगीत और कथाएँ प्रचलित हैं जो अंग्रेजों के साथ हुए समाज के संघर्ष को रेखांकित करते हैं।

राष्ट्रप्रेम से ओतप्रोत जनजाति समाज द्वारा किए गए संघर्ष और बलिदान को शत् शत् नमन।

प्रिय छात्रों,

अत्यंत हर्ष का विषय है कि हम सब इस वर्ष आज़ादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं। यह एक स्वर्णिम अवसर है जब हम स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए हुए संघर्षों और बलिदानों को याद करें। उन वीरगाथाओं का पुनर्पाठ करें।

हम सब जानते हैं कि स्वतंत्रता संग्राम में जनजाति समाज का अविस्मरणीय योगदान रहा है। संगठित विद्रोहों के अलावा भी हज़ारों वैयक्तिक बलिदान हुए हैं।

स्वतंत्रता संग्राम में जनजाति समाज के योगदान और जनजाति नायकों के बलिदानों को जनजाति समाज की युवा पीढ़ी के साथ साझा करने के लिए देश भर में 100 से अधिक विश्वविद्यालयों में **"स्वतंत्रता संग्राम में जनजाति नायकों का योगदान"** विषय पर कार्यक्रम आयोजित हो रहे हैं।

आइए अपने विश्वविद्यालय में होने वाले इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करें। अपने पूर्वजों की वीरगाथाओं को सुनें, उनके बलिदानों को जानें और स्वयं में अपने समाज के प्रति गौरव का भाव जागृत करें।

साथ ही यह एक अवसर भी है जब हम अपने पूर्वजों की परम्परा का निर्वहन करते हुए राष्ट्र की रक्षा, उन्नति और विकास में स्वयं की भूमिका का संकल्प लें।

स्वतंत्रता संग्राम में जनजाति नायकों का योगदान

कार्यक्रम विवरण

स्वागत

प्रस्तावना

उद्बोधन - स्वतंत्रता संग्राम में जनजाति नायकों का योगदान

फिल्म - जनजाति क्रांतिकारी

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग (NCST) प्रस्तुति
फिल्म | परिचय | छात्र संवाद

समारोप

प्रदर्शनी उद्घाटन

NCST

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग

National Commission For Scheduled Tribes

अस्मिता · अस्तित्व · विकास

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग (NCST) भारत के संविधान के **अनुच्छेद 338A** के तहत स्थापित एक **संवैधानिक निकाय** है। आयोग का गठन महामहिम राष्ट्रपति महोदय के द्वारा अपने हस्ताक्षर और मुहर के तहत वारंट द्वारा होता है।

आयोग का संगठनात्मक ढांचा:

पद एवं दर्जा:

- अध्यक्ष - कैबिनेट मंत्री
- उपाध्यक्ष - राज्य मंत्री
- सदस्य (3) - भारत सरकार के सचिव

आयोग का मुख्यालय नई दिल्ली में और देश भर में छह क्षेत्रीय कार्यालय हैं। संविधान निर्माताओं ने अनुभव किया कि जनजाति समुदायों की एक विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान एवं विकास की भिन्न चुनौतियां हैं।

जनजाति समुदाय सदियों से आर्थिक विकास के साथ-साथ पारिस्थितिक संतुलन को सुनिश्चित करने वाली एक विकास दृष्टि का पालन करता रहा है, जिसे आधुनिक दुनिया में अक्षय विकास कहा जाता है। इस परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए, जनजाति की विशिष्ट आवश्यकताओं को मान्यता दी गई।

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग को जनजाति समुदायों के अधिकारों की रक्षा एवं विकास की योजनाओं के निरीक्षण का दायित्व एवं विशेष संवैधानिक दर्जा दिया गया है।

आमंत्रण

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन की
डॉ. अंबेडकर पीठ एवं
राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग, नई दिल्ली
के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित
'स्वतंत्रता संग्राम में जनजाति नायकों का योगदान'
पर केंद्रित राष्ट्रीय संगोष्ठी में आप सादर आमंत्रित हैं।

मुख्य अतिथि
माननीय श्री दुर्गादास उईके
संसद सदस्य, बैतूल-हरदा संसदीय क्षेत्र

अध्यक्षता
प्रो. अखिलेश कुमार पांडेय
कुलपति, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

मुख्य वक्ता
श्रीमती सुजाता मांडवी
सामाजिक कार्यकर्ता, नागपुर

प्रो. शैलेंद्रकुमार शर्मा
कुलानुशासक एवं संयोजक
राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग

डॉ. प्रशांत पुराणिक
कुलसचिव
विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

डॉ. कनिया मेड़ा
शैक्षणिक संयोजक

डॉ. सत्येंद्र किशोर मिश्रा
प्रशासनिक संयोजक एवं चेयर प्रोफेसर
डॉ. अंबेडकर पीठ, विक्रम वि.वि, उज्जैन

दिनांक : 6 सितम्बर, 2022 समय: प्रातः 11.30 बजे
स्थान : स्वर्ण जयंती हॉल, विक्रम विश्वविश्वविद्यालय, उज्जैन

जनजाति नायकों पर केंद्रित विशेष प्रदर्शनी का उद्घाटन
दिनांक : 5 सितम्बर, 2022 समय: दोपहर : 2.30 बजे

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग
छठवा तल, बी–विंग, लोकनायक भवन, खान मार्केट, नई दिल्ली - 110 003
संपर्क नंबर: 011-24604689 | टोल फ्री नंबर: 1800-11-7777
वेबसाइट: www.ncst.nic.in

आज़ादी का अमृत महोत्सव

सत्यमेव जयते

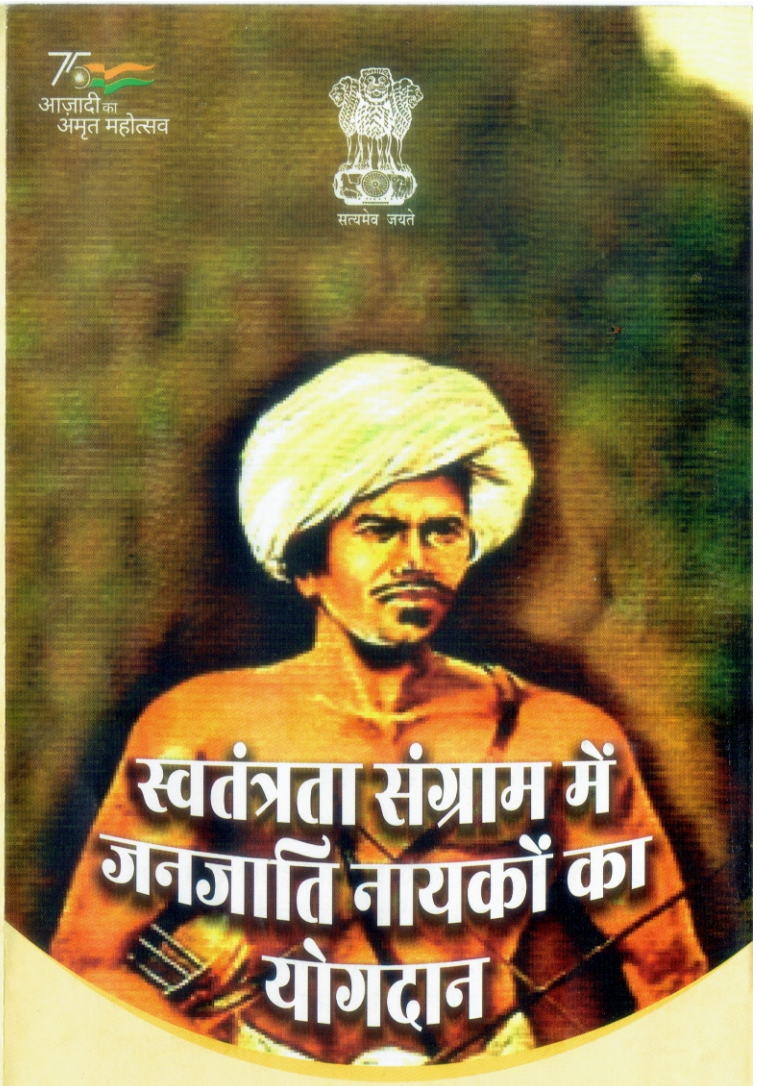

NCST

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग

National Commission For Scheduled Tribes

अस्मिता · अस्तित्व · विकास

सहयोग

अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम

Steel Authority of India Ltd. के साथ